द्वारा लिखित डॉ. श्रीमती इन्दु लाल
गुरुवार, 11 अक्टूबर 2007 18:11 - अंतिम अद्यतन बुधवार, 19 मार्च 2008 23:23

विवेचना :-

क्रोध एक ऐसी भावनात्मक प्रतिक्रिया है जो हमेशा पाप नहीं होती परन्तु अक्सर इस पर नियंत्रण न रखने पर वह व्यक्ति को अपशब्दों के प्रयोग तथा परमेश्वर की व्यवस्था के विरोध में कार्य एवं अभद्र व्यवहार के लिए प्रेरित करती है तथा घातक पाप का रूप धारण करती है।

□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□?

1. □□ □□□□□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□

□□□□□□□ **1.** □□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□?

"यीशु ने परमेश्वर के मन्दिर में जाकर, उन सब को, जो मंदिर में लेन देन कर रहे थे, निकाल दिया; और सर्राफों के पीढ़े और कबूतरों के बेचनेवालों की चौकियां उलट दीं , और उन से कहा; लिखा है, कि
मेरा घर प्रार्थना का घर कहलाएगा
;
परन्तु तुम उसे डाकुओं की खोह बनाते हो।"
(
मत्ती
21:12-13)

क्रोध

द्वारा लिखित डॉ. श्रीमती इन्दु लाल
गुरुवार, 11 अक्टूबर 2007 18:11 - अंतिम अद्यतन बुधवार, 19 मार्च 2008 23:23

उदाहरण 2. मूसा का क्रोध –

“तौभी उन्हों ने मूसा की बात न मानी; इसलिये जब किसी मनुष्य ने उस में से कुछ बिहान तक रख छोड़ा, तो उस में कीड़े पड़ गए और वह बसाने लगा
;
तब मूसा उन पर क्रोधित हुआ।”
(
निर्गमन
16:20)

उदाहरण 3. “छावनी के पास आते ही मूसा को वह बछड़ा और नाचना देख पड़ा, तब मूसा का कोप भड़क उठा, और उस ने तख्तियों को अपने हाथों से पर्वत के नीचे पटककर तोड़ डाला। तब उस ने उनके बनाए हुए बछड़े को लेकर आग में डाल के फूंक दिया। और पीसकर चूर चूरकर डाला
,
और जल के ऊपर फेंक दिया
,
और इस्राएलियों को उसे पलिवा दिया। तब मूसा हारून से कहने लगा
,
उन लोगों ने तुझ से क्या किया कि तू ने उनको इतने बड़े पाप में फंसाया
?
हारून ने उत्तर दिया
,
मेरे प्रभु का कोप न भड़के
;
तू तो उन लोगों को जानता ही है
,
कि वे बुराई में मन लगाए रहते हैं।
”

(निर्गमन 32:19-22)

2. जब व्यक्ति का क्रोध पर नियंत्रण हो तथा उसके क्रोध के कारण न्यायसंगत हों : क्रोध हानिकारक तब होता है जब व्यक्ति का क्रोध पर नियंत्रण नहीं होता बल्कि क्रोध व्यक्ति पर हावी हो जाता है। ऐसी स्थिति में शैतान व्यक्ति का भरपूर दुरूपयोग करता है।

2 / 16

क्रोध

द्वारा लिखित डॉ. श्रीमती इन्दु लाल
गुरुवार, 11 अक्टूबर 2007 18:11 - अंतिम अद्यतन बुधवार, 19 मार्च 2008 23:23

“क्रोध तो करो, पर पाप मत करो। ” (इफिसियों 4:26)

3. जब व्यक्ति क्रोध के कारण शैतान को अपने जीवन में प्रवेश करने का मौका न दे ; क्रोध के समय असंतुलित होकर की गई प्रतिक्रियाएं शैतान का बहुत कारगर उपकरण होती हैं। जिनके द्वारा वह व्यक्ति के जीवन में ज़हर घोलकर उसे विषाक्त कर देता है।

“और न शैतान को अवसर दो। ” (इफिसियों 4:27)

“यदि तू भला करे, तो क्या तेरी भेंट ग्रहण न की जाएगी?

और यदि तू भला न करे, तो पाप द्वार पर छिपा रहता है, और

उसकी लालसा तेरी ओर होगी, और तू उस पर प्रभुता करेगा। ” (उत्पत्ति 4:7)

4. जब व्यक्ति क्रोध को अपने हृदय में पनपने न दे क्रोध के कारण कितने ठोस तथा न्यायसंगत हो इन्हें पनपने देने से शारीरिक, मानसिक एवं आत्मिक विकार उत्पन्न होते हैं। ऐसे छोटे-छोटे क्रोध के कारणों को पनपने देने से शैतान इन्हें इतना बिकराल बना देता है कि फिर व्यक्ति का अपने क्रोध पर कोई नियंत्रण नहीं रह जाता।

3 / 16

क्रोध

द्वारा लिखित डॉ. श्रीमती इन्दु लाल
गुरुवार, 11 अक्टूबर 2007 18:11 - अंतिम अद्यतन बुधवार, 19 मार्च 2008 23:23

“क्रोध तो करो, पर पाप मत करो : सूर्य अस्त होने तक तुम्हारा क्रोध न रहे।” (इफिसियों 4:26)

क्रोध करना कब अनुचित है ‘

1. जब व्यक्ति अपनी इच्छा को परमेश्वर की योजना से बढ़कर प्रमुखता दे और उसकी पूर्ति न होने पर क्रोध करे : हमारी बुद्धि, समझ, ज्ञान, इच्छाएं, तथा योजनाएं बहुत बार परमेश्वर की योजना के ठीक विपरीत होती हैं। हम सीमित हैं। हमारी इच्छाओं के विपरीत परमेश्वर के कार्यों से हम क्रोधित होते हैं। जो सर्वथा अनुचित है।

उदाहरण 1. योना का क्रोध –

“जब परमेश्वर ने उनके कामों को देखा, कि वे कुमार्ग से फिर रहे हैं, तब परमेश्वर ने अपनी इच्छा बदल दी, और उनकी जो हानि करने की ठानी थी, उसको न किया। यह बात योना को बहुत ही बुरी लगी, और उसका क्रोध भड़का।” (योना 3:10, 4:1)

4 / 16

उदाहरण 2. याकूब और यूहन्ना का सामरिया गांव पर क्रोध –

“जब उसके ऊपर उठाए जाने के दिन पूरे होने पर थे, तो उस ने यरूशलेम को जाने का विचार दृढ़ किया। और उस ने अपने आगे दूत भेजे : वे सामरियों के एक गांव में गए, कि उसके लिए जगह तैयार करें। परन्तु उन लोगों ने उसे उतरने न दिया, क्योंकि वह यरूशलेम को जा रहा था। यह देखकर उसके चेले याकूब और यूहन्ना ने कहा; हे प्रभु; क्या तू चाहता है, कि हम आज्ञा दें, कि आकाश से आग गिरकर उन्हें भस्म कर दे। परन्तु उस ने फिरकर उन्हें डांटा और कहा, तुम नहीं जानते कि तुम कैसी आत्मा के हो। क्योंकि मनुष्य का पुत्र लोगों के प्राणों को नाश करने नहीं वरन् बचाने के लिए आया है : और वे किसी और गांव में चले गए।” (लूका 9:51-56)

2. □□ □□□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□:□□

बहुत बार लोगों की अच्छाई के बावजूद व्यक्ति के उनके प्रति क्रोध बना रहता है। इस क्रोध का कोई भी कारण नहीं होता सिर्फ़ स्वयं के हृदय की ईर्ष्या, जलन और कटुता क्रोध को जन्म देती है। इससे बचना और इसे जीवन से दूर करना अत्यन्त अनिवार्य होता है।

उदाहरण 1. उड़ाऊ पुत्र के बड़े भाई का क्रोध –

''यह सुनकर वह क्रोध से भर गया, और भीतर जाना न चाहा : परन्□तु उसका पतिा बाहर आकर उसे मनाने लगा□'' (लूका 15:28)

उदाहरण 2. कैन का क्रोध –

''कुछ दनिों के पश्□चात् कैन यहोवा के पास भूमि की उपज में से कुछ भेंट ले आया□ और हाबलि भी अपनी भेड़-बकरयिों के कई □क पहलिौठे बच्□चे भेंट चढ़ाने के आया और उनकी चर्बी भेंट चढ़ाई
;
तब यहोवा ने हाबलि और उसकी भेंट को तो ग्रहण कयिा
,
परन्□तु कैन और उसकी भेंट को उस ने ग्रहण न कयिा□ तब कैन अतिक्रोधति हुआ
,
और उसके मुंह पर उदासी छा गई□''
(
उत्□पत्ति
4:3-5)

उदाहरण 3. □लीआब का क्रोध –

''जब दाऊद उन मनुष्□यों से बातें कर रहा था, तब उसका बड़ा भाई □लीआब सुन रहा था; और □लीआब दाऊद से बहुत क्रोधति होकर कहने लगा, तू यहां क्□यों आया है
?
तेरा अभमिान और तेरे मन की बुराई मुझे मालूम है

क्रोध

द्वारा लखिति डॉ. श्रीमती इन् दु लाल
गुरुवार, 11 अक्टूबर 2007 18:11 - अंतमि अद्यतन बुधवार, 19 मार्च 2008 23:23

;
तू तो लड़ाई देखने के लयि यहां आया है। ”
(1
शमू ल
17:28)

उदाहरण 4. महायाजकों का क्रोध –

“तब महायाजक और उसके सब साथी जो सदूकियों के पंथ के थे, डाह से भर कर उठे। और प्रेरतिों को पकड़कर बन् दीगृह में बन् द कर दयिा। ” (प्रेरतिों के काम
5:17-18)

“ये बातें सुनते ही जतिने आराधनालय में थे, सब क्रोध से भर ग । ” (लूका 4:28)

3. जब व्यक्ति का क्रोध न्यायपूर्ण डांट के कारण भड़के : बहुत बार न्यायसंगत डांट भी हमें असहनीय होती है। हम क्रोध एवं अपमान से भर उठते हैं। इससे आत्म मूल्यांकन कर हम स्वयं की गलती ठीक करने के बदले गलत प्रतिक्रियाएं व्यक्त करते हैं।

7 / 16

द्वारा लिखित डॉ. श्रीमती इन्□दु लाल
गुरुवार, 11 अक्टूबर 2007 18:11 - अंतिम अद्यतन बुधवार, 19 मार्च 2008 23:23

“तब उज्□जि□य्याह धूप जलाने को धूपदान हाथ में लिये हु□ झुंझला उठा□ और वह याजकों पर झुंझला रहा था, कि याजकों के देखते देखते यहोवा के भवन में धूप की वेदी के पास ही उसके माथे पर कोढ़ प्रगट हुआ□”
(2
इतिहास
26-29)

“ये बातें सुनते ही जितने आराधनालय में थे, सब क्रोध से भर ग□□” (लूका 4:28)

□□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□□□□□:-

1. □□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□: □□□

“क्रोधी पुरुष झगड़ा मचाता है, परन्□तु जो विलम्□ब से क्रोध करनेवाला है, वह मुकद्दमों को दबा देता है□” (नीतिवचन 15:18)

“सब प्रकार की कड़वाहट और प्रकोप और क्रोध, और कलह, और निन्□दा सब बैरभाव समेत तुम से दूर की जा□□” (इफिसियों 4:31)

“सो मैं चाहता हूं, कि हर जगह, पुरूष बिना क्रोध और विवाद के पवित्र हाथों को उठाकर प्रार्थना किया करें□” (1 तीमुथियुस 2:8)

"यहोवा यों कहता है, दोम के तीन क्या, वरन चार अपराधों के कारण मैं उसका दण्ड न छोड़ूंगा; क्योंकि उस ने अपने भाई को तलवार लिए हुए खदेड़ा और कुछ भी दया न की , परन्तु क्रोध से उनको लगातार फाड़ता ही रहा ,
और अपने रोष को अनन्त काल के लिये बनाए रहा"
(
आमोस
1:11)

2. □□□□□□□ □□□□□□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□□□□□□□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□□ □□□□□ □□ **:**

"परन्तु मैं तुम से यह कहता हूं, कि जो कोई अपने भाई पर क्रोध करेगा, वह कचहरी में दण्ड के योग्य होगा : और जो कोई अपने भाई को निकम्मा कहेगा वह महासभा में दण्ड के योग्य होगा
;
और जो कोई कहे "अरे मूर्ख
!
" वह नरक की आग के दण्ड के योग्य होगा"
(
मत्ती
5:22)

"धिक्कार उनके कोप को, जो प्रचण्ड था और उनके रोष को, जो निर्दय था; मैं उन्हें याकूब में अलग अलग और इस्राएल में तितर वितर कर दूंगा" (उत्पत्ति 49:7)

"क्रोध तो क्रूर, और प्रकोप धारा के समान होता है, परन्तु जब कौन ठहर सकता है" (नीतिवचन 27:4)

क्रोध

द्वारा लिखित डॉ. श्रीमती इन्दु लाल
गुरुवार, 11 अक्तूबर 2007 18:11 - अंतिम अद्यतन बुधवार, 19 मार्च 2008 23:23

“तब आसा दर्शी पर क्रोधित हुआ और उसे काठ में ठोंकवा दिया, क्योंकि वह उसकी ऐसी बात के कारण उस पर क्रोधित था। और उसी समय से आशा प्रजा के कुछ लोगों को पीसने भी लगा।” (2 इतिहास 16:10)

3. अनुचित क्रोध करने वाले व्यक्ति अपने जीवन में परमेश्वर की इच्छा और योजना से दूर जा सकते हैं :

“हे मेरे प्रिय भाइयो, यह बात तुम जानते हो : इसलिये हर एक मनुष्य सुनने के लिये तत्पर और बोलने से धीरा और क्रोध में धीमा हो। क्योंकि मनुष्य का क्रोध परमेश्वर के धर्म का निर्वाह नहीं कर सकता है।” (याकूब 1:19-20)

4. अनुचित क्रोध करना स्वयं पर परमेश्वर के न्याय को आमंत्रण देना है

“परन्तु मैं तुम से यह कहता हूं, कि जो कोई अपने भाई पर क्रोध करेगा, वह कचहरी में दण्ड के योग्य होगा : और जो कोई अपने भाई को निकम्मा कहेगा वह महासभा में दण्ड के योग्य होगा ; और जो कोई “हे अरे मूर्ख” वह नरक की आग के दण्ड के योग्य होगा।” (मत्ती 5:22)

10 / 16

क्रोध

द्वारा लिखित डॉ. श्रीमती इन्दु लाल
गुरुवार, 11 अक्टूबर 2007 18:11 - अंतिम अद्यतन बुधवार, 19 मार्च 2008 23:23

“हे प्रियो अपना पलटा न लेना; परन्तु क्रोध को अवसर दो, क्योंकि लिखा है, पलटा लेना मेरा काम है, प्रभु कहता है मैं ही बदला दूंगा। परन्तु यदि तेरा बैरी भूखा हो, तो उसे खाना खिला; यदि प्यासा हो, तो उसे पानी पिला; क्योंकि ऐसा करने से तू उसके सिर पर आग के अंगारों का ढेर लगाएगा।” (रोमियों 12:19)

“जिसकी आत्मा वश में नहीं वह ऐसे नगर के समान है जिसकी शहरपनाह नाका करके तोड़ दी गई हो।” (नीतिवचन 25:28)

अनुचित क्रोध से कैसे बचें ?

1. आत्मनियंत्रण: यदि व्यक्ति पर क्रोध हावी हो जाए और वह आत्मनियंत्रण खो दे तो वह स्वयं ही हानि का कारण ठहरेगा।

“क्रोध से परे रह, और जलजलाहट को छोड़ दे! मत कुढ़, उस से बुराई ही निकलेगी।” (भजन संहिता 37:8)

11 / 16

क्रोध

द्वारा लिखित डॉ. श्रीमती इन्दु लाल
गुरुवार, 11 अक्टूबर 2007 18:11 - अंतिम अद्यतन बुधवार, 19 मार्च 2008 23:23

“मूढ की रिस उसी दिन प्रगट हो जाती है, परन्तु चतुर अपमान को छिपा रखता है। ” (नीतिवचन 12:16)

“जो झट क्रोध करे वह मूढ़ता का काम भी करेगा और जो बुरी युक्तियां निकलता है, उससे लोग बैर रखते हैं। ” (नीतिवचन 14:17)

“अपने मन में उतावली से क्रोधित न हो, क्योंकि क्रोध मूर्खो ही के हृदय में रहता है। ” (सभोपदेशक 7:9)

आत्मिकता में परिपक्व व्यक्ति हमेशा अपने क्रोध पर नियंत्रण रखते हैं और बेसमय इसे प्रकट नहीं करते।

2. मूल्यांकन : क्रोध को हृदय में पनपने देने या प्रकट करने के पूर्व सही कारणों का मूल्याकंन करना आवश्यक है। बहुत बार व्यक्ति के स्वयं के ग़लत विचार उसके क्रोध का कारण होते हैं।

“कोमल उत्तर सुनने से जल-जलाहट ठण्डी होती है, परन्तु कटु वचन से क्रोध धधक उठता है। ” (नीतिवचन 15:1)

12 / 16

क्रोध

द्वारा लिखित डॉ. श्रीमती इन्दु लाल

गुरुवार, 11 अक्तूबर 2007 18:11 - अंतिम अद्यतन बुधवार, 19 मार्च 2008 23:23

“भेंट मनुष्य के लिये मार्ग खोल देती है, और उसे बड़े लोगों के साम्हने पहुंचाती है। ” (नीतिवचन 18:16)

“क्योंकि बुद्धि, मूंगे से भी अच्छी है, और सारी मनभावनी वस्तुओं में कोई भी उसके तुल्य नहीं है। ” (नीतिवचन 8:11)

3. **धीरज :** क्रोध से वशीभूत व्यक्ति के विचार, शब्द और प्रतिक्रियाएं प्रायः हानिकारक ही होती है। ऐसे समयों में बेहतर यह रहता है कि उस परिस्थिति से स्वयं को दूर कर लें। अपना ध्यान गीत-संगीत सुनकर, उल्टी गिनती गिनकर या अन्य माध्यम से बिल्कुल फर्क दिशा में बंटा लें। यह खतरनाक समय टल जाने पर व्यक्ति स्वयं इस बात से असीम संतोष का अनुभव करता है कि उसने किसी भी प्रकार का अभद्र व्यवहार नहीं किया जो उसके भविष्य के लिए हमेशा लाभकारी ही प्रमाणित होता है।

“क्रोध से परे रह, और जलजलाहट को छोड़ दे! मत कुढ़, उस से बुराई ही निकलेगी। ” (भजन संहिता 37:8)

“क्रोधी पुरूष झगड़ा मचाता है, परन्तु जो विलम्ब से क्रोध करने वाला है, वह मुकद्दमों को दबा देता है। ” (नीतिवचन 15:18)

13 / 16

क्रोध

द्वारा लिखित डॉ. श्रीमती इन्दु लाल
गुरुवार, 11 अक्टूबर 2007 18:11 - अन्तिम अद्यतन बुधवार, 19 मार्च 2008 23:23

“विलम्ब से क्रोध करना वीरता से, और अपने मन को वश में रखना, नगर के जीत लेने से उत्तम है।” (नीतिवचन 16:32)

“जो मनुष्य बुद्धि से चलता है वह विलम्ब से क्रोध करता है, और अपराध को भुलाना उसको सोहता है।” (नीतिवचन 19:11)

“क्योंकि अध्यक्ष को परमेश्वर का भण्डारी होने के कारण निर्दोष होना चाहिए; न हठी, न क्रोधी, न पियक्कड़, न मारपीट करनेवाला, और न नीच कमाई का लोभी।” (तीतुस 1:7)

“हे मेरे प्रिय भाइयो, यह बात तुम जानते हो : इसलिये हर एक मनुष्य सुनने के लिये तत्पर और बोलने में धीमा और क्रोध में धीमा हो।” (याकूब 1:19)

4. संवाद **:** बहुत बार व्यक्ति का क्रोध मात्र किसी तीसरे व्यक्ति की बातों को सुनने के कारण होता है, जो सही और सच्ची बात पर आधारित नहीं होता। ऐसी स्थिति में सर्वोत्तम यही रहता है कि संबंधित व्यक्ति से आमने-सामने बात कर सब भ्रान्तियाँ दूर कर लें। मन में कुढ़ते रहना, क्रोध को पनपने देना, शैतान को अवसर देने की ही बात होती है।

14 / 16

"टेढ़ा मनुष्य बहुत झगड़े को उठाता है, और कानाफूसी करनेवाला परम मित्रों में भी फूट करा देता है।" (नीतिवचन 16:28)

"छः वस्तुओं से यहोवा बैर रखता है, वरन सात हैं जिन से उसको घृणा है --- झूठ बोलनेवाला साक्षी और भाइयों के बीच में झगड़ा करनेवाला मनुष्य।"

(नीतिवचन 6:16,19)

"यदि कोई और ही प्रकार का उपदेश देता है; और खरी बातों को, अर्थात् हमारे प्रभु यीशु मसीह की बातों को और उस उपदेश को नहीं मानता, जो भक्ति के अनुसार है तो वह अभिमानी हो गया
,
और कुछ नहीं जानता
,
वरन् उसे विवाद और शब्दों पर तर्क करने का रोग है
,
जिन से डाह
,
और झगड़े
,
और निन्दा की बातें
,
और बुरे बुरे संदेह और उन मनुष्यों में व्यर्थ रगड़े झगड़े उत्पन्न होते हैं
,
जिन की बुद्धि बिगड़ गई है और वे सत्य से विहीन हो गए हैं
,
जो समझते हैं कि भक्ति कमाई का द्वार है।"
(1
तीमुथियुस
6:3-5)

"क्योंकि बहुत से लोग निरंकुश, बकवादी और धोखा देनेवाले हैं; विशेष करके खतनावालों में से। इन का मुंह बन्द करना चाहिए : ये लोग नीच कमाई के

क्रोध

द्वारा लिखित डॉ. श्रीमती इन्दु लाल
गुरुवार, 11 अक्टूबर 2007 18:11 - अंतिम अद्यतन बुधवार, 19 मार्च 2008 23:23

लिये अनुचित बातें सिखाकर घर के घर बिगाड़ देते हैं। ”
(तीतुस 1:10,11)

5. प्रार्थना : प्रार्थना एक ऐसा माध्यम और शास्त्र है जिसके द्वारा परमेश्वर स्वयं हमारे जीवनों में कार्य करता है। चाहे हम कितनी भी निराशाजनक स्थिति में क्यों न हों, हम अपनी सहायता करने में पूर्ण रूप से अक्षम हों, किन्तु परमेश्वर हमारी सहायता कर सकता है, वह हमको पूरी रीति से परिवर्तित कर सकता है।

16 / 16